ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 18 अंक 38 कुल पृष्ठ-8 4 से 10 मई, 2023 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853124 सम्वत् 2080 वै. कृ.-15

जोधपुर में आयोजित तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तैयारी जोरों पर

सम्मेलन में देश-विदेश से अनेक आर्य नेता, विद्वान् एवं आर्य जन भाग लेंगे

सम्मेलन की तैयारी के लिए जोधपुर में कार्यकर्ताओं की हंगामी बैठक सम्पन्न - स्वामी आदित्यवेश

राजस्थान के यशस्वी मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत सम्मेलन के मुख्य अतिथि होंगे तथा शहीदे आजम सरदार भगत सिंह के भतीजे श्री किरणजीत सिंह सिन्धु भी सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारेंगे

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती व जोधुपर आगमन के 140 वर्ष पूर्ण होने पर जोधपुर में पहली बार अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन विशाल स्तर पर 26, 27 एवं 28 मई, 2023 को जोधपुर (राजस्थान) में आयोजित किया जा रहा है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी नेता एवं विश्वविख्यात संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी सम्मेलन की तैयारियों के सम्बन्ध में 2 मई, 2023 को जोधपुर पधारे और कार्यकर्ताओं की हंगामी बैठक ली। बैठक के उपरान्त पत्रकारों से वार्ता करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि इस सम्मेलन में राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र सहित देश के विभिन्न राज्यों के अतिरिक्त दक्षिण अफ्रीका, युगाण्डा, केनिया, मॉरीशस, हौलण्ड तथा अमेरिका आदि देशों से भी आर्य समाज के अधिकारी एवं विद्वान् सम्मेलन में पधार रहे हैं। इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में अनेक गुरुकुलों के ब्रह्मचारी/ब्रह्मचारिणियां, आर्य वीर, आर्य महानुभाव, सन्यस्तगण भारी संख्या में सम्मिलित होंगे।

प्रेस वार्ता में जोधपुर शहर की यशस्वी विधायक मनीषा पंवार भी उपस्थित थीं। उन्होंने पत्रकारों को बताया कि आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान व आर्य वीर दल राजस्थान के बैनर तले होने वाले इस तीन दिवसीय आर्य महासम्मेलन के मुख्य अतिथि प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत जी होंगे। इसके अलावा प्रदेश के अन्य मंत्रियों को भी इस सम्मेलन में आने का निमंत्रण दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के नारी जाति पर अनेक उपकार हैं। इसलिए इस सम्मेलन में महिलाओं की भी विशेष भागीदारी होगी। स्वामी दयानन्द जी ने ही सर्वप्रथम नारी जाति के उद्धार एवं उनके हक की बात उठाई थी। आज उन्हीं के विचारों एवं सिद्धान्तों की बदौलत मैं विधायक हूँ, इसलिए उस ऋषि के प्रति हम सबको नतमस्तक होकर उनके विचारों को जन-जन तक पहुंचाने में अपना अमूल्य योगदान करना हम सबका कर्त्तव्य है।

पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए तेजस्वी युवा संन्यासी एवं अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के मुख्य संयोजक स्वामी आदित्यवेश जी ने बताया कि कार्यक्रम में युवा सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, आजादी के आन्दोलन में आर्य समाज का योगदान, आर्य वीर व्यायाम सम्मेलन, संस्कृति रक्षा सम्मेलन, कवि सम्मेलन, एक शाम ऋषि दयानन्द के नाम, सामाजिक समरसता, महिला सम्मेलन, कार्यकर्ता सम्मान समारोह सहित विभिन्न सम्मेलन आयोजित होंगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट ने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में होने वाला यह आर्य महासम्मेलन

शेष पृष्ठ 6 पर

वेद अपनाइए–मानवता बचाइए

– डॉ. कृष्णवल्लभ पालीवाल

यदि महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्य अनेक राष्ट्र निर्माणकारी और धर्म रक्षा कार्य न भी करते और केवल इन्हीं शब्दों की पुष्टि में जीवन लगा देते कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है'' तो भी वह विश्व मानव कल्याण के उच्च शिखर पर विराजमान होते। मानवता की रक्षा और मानव धर्म में सत्य की स्थापना में उनका स्थान सर्वोच्च होता, क्योंकि यदि हम महर्षि के कार्यकलापों और उनके ग्रन्थों को गम्भीरता से देखें, तो वह कदम-कदम पर सत्य धर्म की स्थापना एवं उसमें मानवीय मूल्यों की रक्षा करते दिखाई देते हैं। जैसा कि उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में लिखा है कि ''मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य के सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है, उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना, सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है... क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।'' मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य के निर्णय करने कराने के लिए है।'' अतः स्वामी जी सत्य धर्म की स्थापना और मनुष्य जाति की उन्नति को अपना जीवन लक्ष्य मानते हैं।

स्वामी जी की पीड़ा थी कि अज्ञान, सम्प्रदायवाद व धार्मिक अन्धविश्वासों में फंसी मानव जाति को सत्य धर्म का दिग्दर्शन कैसे कराया जाए? उसके लिए उन्होंने विश्व धर्मों के प्रमुख ग्रन्थों को पढ़ा, उनके उद्देश्य व कार्यविधि पर गम्भीरता से मनन किया, और सैकड़ों धर्मशास्त्रों के पढ़ने के बाद वह इस निर्णय पर पहुँचे कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, यह मानव मात्र का पुस्तक है। इसमें मनुष्यों को मोमिनों और काफिरों तथा विश्वासियों और अविश्वासियों के बीच नहीं बाँटा गया है। इनकी शिक्षाओं में पक्षपात, द्वेष व अपना-परायापन नहीं है। वेदों की शिक्षाएँ तो सार्वकालिक, सार्वदेशिक व समस्त मानव मात्र के धर्मग्रन्थ हो सकते हैं, क्योंकि इनमें मानव मात्र की साम्प्रदायिक घृणा, द्वेष व वर्गवाद नहीं है, जैसा कि हम कुरान व बाइबिल में देखते हैं।

इसीलिए सभी प्राचीन आर्ष ग्रन्थों ने वेदों को प्रामाणिक धर्म ग्रन्थ माना है। ब्राह्मण ग्रन्थों, उपनिषदों, स्मृतियों, पुराणों व अन्य अर्वाचीन ग्रन्थों में वेदों को प्रामाणिक धर्मगन्थ माना है।'' धर्म के जिज्ञासुओं के लिए वेद परम प्रमाण हैं'' (मनु. 2,3)। ''लोग वेदों के अनुसार अपने-अपने धर्म का पालन करें'' (मनु. 2.8)। 'वेद से बढ़कर कोई धर्मशास्त्र नहीं है ' (अत्रिस्मृति)। इसीलिए महर्षि ने वेदों की सत्यता, निष्पक्षता, उदात्तता व मानवता के कारण मानवमात्र को उन्हें पढ़ने-पढ़ाने को परमधर्म निर्धारित किया है।

वेदभाष्य

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए देववाणी में विद्यमान वेदों का उन्होंने भाष्य किया तथा वेदों के रहस्यों को समझने के लिए वेद भाष्य परम्परा के सूत्र ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में स्थापित किए। यह मानव जाति का दुर्भाग्य है कि वह चारों वेदों का भाष्य सम्पूर्ण न कर सके, मगर उनके अनुयायियों ने वह कार्य अपनी-अपनी योग्यता, क्षमता, दृष्टि व शिक्षा-दीक्षा के अनुसार पूरा किया। परिणामस्वरूप आज चारों वेदों के भाष्य हिन्दी व अंग्रेजी व कुछ अन्य प्रान्तीय भाषाओं में मिलते हैं।

वास्तविक स्थिति क्या है?

महर्षि दयानन्द के वेद भाष्य ने धार्मिक जगत् में एक क्रान्ति ला दी, मानवता को नया स्वरूप प्रदान किया। शक्ति, निर्माण, आत्मविश्वास और पुरुषार्थ की नवीन लहर संचारित की। उन्होंने मानव मात्र को भाग्यवादी व पोपवादी व कठमुल्ला अरबी संस्कृति से मुक्ति दिलाने के लिए एक अद्वितीय प्रेरणा स्रोत वेद विश्व मानव मात्र के सामने रखा, जिसका निष्पक्ष विचारकों, दार्शनिकों ने देश-विदेश की सीमाओं को लांघकर स्वागत किया। मगर इतना होते हुए भी मानव मात्र में तो क्या आज स्वयं आर्य समाज में भी वेद प्रचार की लहर अपेक्षाकृत कम है। सार्वदेशिक, प्रान्तीय एवं पाँच हजार के करीब आर्य समाजों के होते हुए भी आम जनता में वेद प्रचार की पहुँच कम है।

इस शिथिलता के कई व्यावहारिक कारण हैं। पहला, आर्य समाज के अनुयायियों की संख्या कम है। दूसरा अन्य सभ्भी हिन्दू धर्माचार्य वेदों को हिन्दू धर्म का आदि स्रोत मानते हुए भी गीता, पुराण, भागवत व उपनिषदों की मिलीजुली बात करते हैं, वेदों की नहीं, क्योंकि वेदों तक उनकी पहुँच भी नहीं है। तीसरा, वेदों की शिक्षाएँ अथवा उनका स्वरूप कथानक व रामायण महाभारत की तरह ऐतिहासिक कथा न होने के कारण नीरस, शुष्क व गम्भीर हैं। चौथे, चारों वेदों का हिन्दी/अंग्रेजी व प्रान्तीय भाषाओं में भाष्य एक जिल्द में न होना भी वेद प्रचार की प्रगति में बाधक है। पाँचवें, विभिन्न आय वर्ग के लोगों के लिए सरल, क्षेत्रीय भाषा में व्यावहारिक मन्त्रों की छोटी-छोटी पुस्तकें नहीं नहीं हैं। सातवें, वेदों के सूक्त किसी विशेष क्रम में नहीं होने के कारण वेदों की शिक्षाएँ विषयानुसार नहीं हैं, जिससे पाठक भटक जाता है।

फिर क्या करें?

सबसे पहली आवश्यकता है कि वेद प्रचार को विश्वव्यापी बनाने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय, वेद अनुसंधान संस्थान स्थापित करें, जिसमें विभिन्न विभाग हों, जो कि सरकारी नियन्त्रण से मुक्त हो। फिर उसमें उपरोक्त समस्याओं के निराकरण के लिए कार्य किया जाए।

एक प्रमाणिक भाष्य बनने पर उसके अंग्रेजी व क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद किए जाएँ और उसे एक जिल्द में प्रकाशित किया जाए, जो कि आज के पतले कागज की उपलब्धि व कम्प्यूटर तकनीक के होते हुए सभी बीस हजार मन्त्रों को एक जिल्द में सामान्य मूल्य पर दिया जा सकता है। क्या यह हमारे लिए लज्जा की बात नहीं है कि हमारा धर्मग्रन्थ एक जिल्द में हमारे ही घर में नहीं है, जबकि बाइबिल व कुरान की करोड़ों प्रतियाँ विभिन्न आकार-प्रकारों में मिलती हैं। मेरे विचार से न विद्वानों की कमी है और न साधनों की। यदि कोई कारण है तो संस्थाओं के कर्ताधर्ताओं की उपेक्षा। यदि सभाएँ नहीं करना चाहती, तो वेद प्रेमी व धनाढ्य बन्धु अपना संगठन बनाकर इस मानव हितकारी कार्य को अपने हाथ में लें और अपने प्राणप्रिय धर्म की पोथी कम से कम मूल्य पर मानव मात्र के हाथ में पहुँचावें। यह न केवल धर्म प्रचार बल्कि मानवता की रक्षा का कार्य है, क्योंकि पिछले दो हजार वर्षों के ईसाइयत के खून खराबे से सारा यूरोप तबाह हो गया। उन्होंने पोप को त्याग दिया, जो कि अब भारत के ईसाईकरण में लगा है। उसी की पूर्ति के लिए ओपस जी नामक संस्था विभिन्न रूपों में कार्य कर रही है।

इस्लाम का तालिबानी आतंकवाद विश्वविख्यात है। भारत सहित अनेक देशों में इस्लामी आतंकवाद एक समस्या है। आज भारत के हिन्दू ही नहीं, विश्व के निष्पक्ष मानवतावादी विद्वान् इस धार्मिक कट्टरता से परेशान हैं। वे तो वेदों के सार्वदेशिक सार्वकालिक मानव कल्याण सन्देश व व्यवहार की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

ज्ञान के आदान-प्रदान की सीमाएँ समाप्त हो गई हैं। वेदों का ज्ञान सर्वत्र सुलभ है, जिसने सिद्ध कर दिया है कि वेदों की शिक्षाएँ संकुचित, विघटनकारी, विभेदकारी, आतंकवादी और अशांतिकारक न होकर प्रगतिशील, रचनात्मक, मानवतावादी एवं मानव मात्र को जोड़ने वाली हैं, तोड़ने वाली नहीं है। इनमें धर्म के नाम पर जिहाद या क्रूसेड का आह्वान नहीं है। मानवता की मंगलकामना ही वेदों का एकमात्र लक्ष्य है। पिछले हजारों वर्षों के इतिहास से स्पष्ट है कि वेदानुयायियों ने किसी देश पर अपना धर्म मनवाने के लिए चढ़ाई व हत्याएँ नहीं की हैं, जैसा कि हम इस्लाम व ईसाइयत के इतिहास में देखते हैं। मगर इस मंगलकारी मानवता रक्षा अभियान का सूत्रपात तो आर्यसमाज को ही तेजी से करना होगा।

सार्वदेशिक सभा द्वारा चारों दर्शनों एवं संस्कार विधि का पुनर्प्रकाशन

भाष्यकार तर्क शिरोमणि – स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

1. वेदान्त दर्शन	– पृष्ठ 232	– मूल्य 100 रुपये
2. वैशेषिक दर्शन	– पृष्ठ 248	– मूल्य 100 रुपये
3. न्याय दर्शन	– पृष्ठ 240	– मूल्य 100 रुपये
4. सांख्य दर्शन	– पृष्ठ 156	– मूल्य 80 रुपये
5. संस्कार विधि	– पृष्ठ 278	– मूल्य 90 रुपये

बढ़िया कागज, सुन्दर प्रिंटिंग व आकर्षक टाइटल के साथ 25 प्रतिशत छूट पर सभा कार्यालय में उपलब्ध है।

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

''दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

दूरभाष :- 011-42415359, 23274771

किसानों एवं मजदूरों के नेता प्रो. श्योताज सिंह जी की स्मृति में उनकी 5वीं पुण्य तिथि के अवसर पर प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन

प्रो. श्योताज सिंह जी ने अपनी पूरी जिन्दगी मजदूरों के हक लड़ाई में लगाया – स्वामी आर्यवेश

30 अप्रैल 2023 को बंधुआ मुक्ति मोर्चा के पूर्व महामंत्री व आर्य समाज के युवा संगठन के पूर्व राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष प्रो. श्योताज सिंह जी की 5वीं पुण्य तिथि के अवसर पर उनके पैतृक गांव जैनाबाद में प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आरंभ यज्ञ के माध्यम से हुआ।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने प्रो. श्योताज सिंह जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उन्होंने अपनी पूरी जिंदगी गरीब व मजदूरों के हक एवं अधिकारों के लिए लगाई। बंधुआ मुक्ति मोर्चा के राष्ट्रीय महासचिव रहते हुए संगठन में लगभग तीन लाख मजदूरों को पुनर्वासित करवाने के कार्य में भी बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। कई बार उनके ऊपर जानलेवा हमले भी हुए। लेकिन वे कभी अपने लक्ष्य से विमुख नहीं हुए। आर्य समाज में युवाओं के निर्माण के लिए सैंकड़ों बड़े–बड़े कार्यक्रमों का आयोजन भी इनकी देख–रेख में हुआ। 1987 में दिल्ली से देवराला की सतीप्रथा विरोधी जन चेतना यात्रा की व्यवस्था भी आपने श्री सत्यव्रत समवेदी व श्री रामसिंह आर्य तथा श्री बिरजानंद एडवोकेट के साथ मिलकर संभाली। 2005 में स्वामी दयानंद के जन्म स्थान टंकारा से जलियांवाला बाग अमृतसर तक की बेटी बचाओ यात्रा में आपका महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा। अपने जीवन के प्रारंभिक दौर में ही कॉलेज के प्रोफेसर की नौकरी छोड़कर स्वामी अग्निवेश जी के साथ कार्य करना प्रारम्भ कर दिया था।

अपने विचार रखते हुए आर्यनेता श्री राम निवास जी ने कहा कि प्रो. श्योताज सिंह जी का जीवन आध्यत्मिक मूल्यों से ओतप्रोत रहा। समता वाला जीवन जीना उनकी कार्यशैली का हिस्सा था। हमेशा दिखावे से दूर रहकर साधारण खान–पान व साधारण वेशभूषा ने उनके जीवन को प्रेरणादायक बना दिया था।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने कहा कि प्रोफेसर साहब जी ने बेटी बचाओ अभियान में विशेष सहयोग किया था, उन्होंने हमेशा युवा कार्यकर्ताओं को प्रेरित करके समाज में कार्य करने के लिए आगे बढ़ाया।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानंद एडवोकेट ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि प्रोफेसर साहब का अचानक हम सबके बीच से चले जाना संगठन की अपूर्णीय क्षति हुई है, परन्तु आज भी उनके विचार एवं संघर्ष हम सभी के दिलों जिन्दा है और हमारे प्रेरणा स्रोत हैं। आज के युवाओं को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए और समाज के दबे–कुचले लोगों के संघर्ष करके उनके हक की लड़ाई लड़ने के लिए आगे आना चाहिए।

इस अवसर पर जिन महानुभावों ने श्रद्धांजलि अर्पित की उनके नाम उल्लेखनीय हैं – बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजिका बहन प्रवेश आर्या, श्री यशवंत आर्य, स्वामी यशदेव, स्वामी आदित्यवेश, श्री प्रेमराज आर्य, श्री सुंदर यादव, श्री सुरेंद्र यादव, श्री विष्णु पाल, श्री जावेद आदि ने भी प्रो. श्योताज सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम के अन्त में स्वामी आर्यवेश जी, बहन पूनम आर्या, बहन प्रवेश आर्या, श्री बिरजानंद एडवोकेट, श्री राम निवास ने प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को प्रतिभा सम्मान से सम्मानित किया। जिन विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया उनके नाम उल्लेखनीय हैं – दिव्या, पीयूष, प्रतिभा, पल्लवी, खुशी, तमन्ना, प्रवीण, भावना, कशिश, ममता, जागृति, शिवम शर्मा, तनु, भावना, विनय, लक्ष्मी नारायण आदि शामिल हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
द्वारा प्रकाशित
'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/– रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 011–42415359
मो.:–8218863689

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में दो दिवसीय अखिल भारतीय वेद विज्ञान सम्मेलन हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

वेद में समस्त विद्याएं निहित हैं – रामनाथ कोविन्द

वेद मार्ग पर चलकर ही विश्व का कल्याण किया जा सकता है – स्वामी आर्यवेश

वेद आधारित मान्यताओं पर जंगल, जल एवं जमीन का संरक्षण हो – प्रो. विट्ठलराव आर्य

वेद के प्रत्येक मन्त्र में विज्ञान छुपा है – डॉ. सत्यपाल सिंह

वेद ही सर्वोत्तम ज्ञान है – स्वामी प्रणवानन्द

वेद ही सच्चे मानव की जननी है – स्वामी चिदानन्द

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में 29 एवं 30 अप्रैल, 2023 को सी सुब्रमण्यम हॉल, पूसा संस्थान, नई दिल्ली में दो दिवसीय अखिल भारतीय वेद विज्ञान सम्मेलन का आयोजन भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम का आयोजन विश्व वेद परिषद्, परमार्थ निकेतन, कृषि एवं किसान कल्याण मन्त्रालय भारत सरकार, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् एवं पतंजलि विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित किया गया। इस दो दिवसीय अखिल भारतीय वेद विज्ञान सम्मेलन में मुख्य रूप से पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द जी, पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह जी, केन्द्रीय मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर जी, स्पीकर श्री ओम बिरला जी, केन्द्रीय मंत्री श्री कैलाश चौधरी जी, अन्तर्राष्ट्रीय आर्य नेता स्वामी आर्यवेश जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी, अनेक गुरुकुलों के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, परमार्थ निकेतन के अध्यक्ष स्वामी चिदानन्द जी महाराज, युवा तेजस्वी संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, पुरोहित सभा के अध्यक्ष आचार्य प्रेमपाल शास्त्री सहित गणमान्य नेता एवं विद्वान् सम्मिलित रहे। सम्मेलन का शुभारम्भ यज्ञ के साथ किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी थे। यज्ञ में केन्द्रीय मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर जी, पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह जी, केन्द्रीय मंत्री श्री कैलाश चौधरी जी सहित अन्य गणमान्य महानुभावों ने आहुति प्रदान की।

यज्ञ के उपरान्त उद्घाटन समारोह हुआ जिसके मुख्य अतिथि लोकसभा के स्पीकर श्री ओम बिरला थे तथा अध्यक्ष केन्द्रीय मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर जी ने की। इस उद्घाटन सत्र में पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह, स्वामी चिदानन्द जी महाराज, कृषि राज्यमंत्री श्री कैलाश चौधरी आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किये। मंच पर स्वामी आर्यवेश जी, सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती आदि भी शोभायमान थे। उद्घाटन सत्र के पश्चात् वेद में प्राकृतिक कृषि तथा पर्यावरण विषय पर चर्चा हुई। इस सत्र की अध्यक्षता स्वामी आर्यवेश जी ने की तथा मंच का संचालन गुरुकुल कांगड़ी के प्रो. डॉ. दीनदयाल ने किया।

अपने ओजस्वी व्याख्यान में डॉ. सत्यपाल सिंह जी ने बताया कि वेद के प्रत्येक मंत्र में विज्ञान छुपा है। इस दिशा में हमें अनुसंधान करने की आवश्यकता है।

वेद सम्मेलन में अपने विचार रखते हुए आर्य नेता स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी जब कार्य क्षेत्र में अवतरित हुए उस समय चारों तरफ, हताशा, अन्धकार अंग्रेजों का दमन चक्र, स्वाभिमान का अभाव, धर्म के नाम पर पाखण्ड, सत्य के नाम पर असत्य तथा ज्ञान के नाम पर अज्ञान का साम्राज्य व्याप्त था। ऐसे समय में महर्षि ने जन मानस को नई शक्ति, प्रेरणा तथा दिशा दी और भारत के कण–कण में स्फूर्ति का संचार किया। पाखण्डों का खण्डन कर, कुरान, बाईबिल के प्रभाव पर प्रबल प्रहार कर महर्षि ने राम, कृष्ण और ऋषि–मुनियों की पावन परम्परा को पुनः प्रवाहित किया। वेद ज्ञान की ज्योतिर्मय पताका फहराने के लिए जन–जन में वेद ज्ञान के प्रति आस्था जगाई। वर्तमान युग में यह बात किसी से छिपी नहीं है कि महर्षि दयानन्द जी जहाँ एक ओर प्राचीनता के पक्षधर और वेदोद्धारक थे वहीं वे दूसरी ओर नवयुग के नेता, वर्तमान के विधाता और भविष्य के पथ प्रदर्शक भी थे। वेद ज्ञान के प्रसारक महर्षि दयानन्द सरस्वती, पाखण्डों को खण्ड–खण्ड करते हुए प्राचीन ऋषि मुनियों की पावन परम्परा के अजस्र प्रवाह को प्रवाहित करते हुए भारत के कोने–कोने में सत्य ज्योति फैलाते हुए घूमते रहे। अपने अपूर्व ज्ञान, तप, त्याग और अगाध पाण्डित्य से स्वामी दयानन्द जी ने भारत के गौरव को पुनः प्रतिष्ठित किया। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने वेद ज्ञान को सर्वोच्च ज्ञान बताया। वेद में सभी ज्ञान निहित है।

सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने कहा कि आज का आधुनिक विकास का मॉडल जंगल, जल और जमीन को प्रदूषित कर रहा है। आधुनिक तरीके से की जा रही खेती में जो रासायनिक उर्वरक प्रयोग हो रहे हैं उससे उत्पादन क्षमता तो बढ़ रही है, परन्तु रासायनिक खाद अनेक प्रकार की बीमारियों की जन्मदाता है। इसलिए स्वास्थ्य संरक्षण के साथ–साथ प्रकृति का संरक्षण बहुत जरूरी है तथा प्रकृति आधारित खेती की भी जरूरत है। उससे वास्तव में यत्र विश्वम् भवति एकनीडम् की भावना को मजबूत और विस्तार दिया जा सकता है। इसलिए स्वामी दयानन्द जी की वह घोषणा कि वेदों की ओर लौटो और प्रकृति की ओर लौटो तभी सार्थक होगी जब वेद आधारित मान्यताओं को जल, जीवन, प्रकृति के संरक्षण के लिए उपयोग में लाई जायेगी, तभी हम स्वामी दयानन्द सरस्वती जी जयन्ती मनाने का सपना सार्थक कर सकते हैं।

30 अप्रैल, 2023 को सत्र का प्रारंभ श्री रामनाथ कोविन्द के आगमन के पश्चात वैदिक यज्ञ से हुआ। पूर्व राष्ट्रपति एवं कार्यक्रम के मुख्य अतिथि का स्वागत स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, स्वामी आर्यवेश जी एवं अन्य विद्वतगणों द्वारा किया गया। मंच आगमन के उपरांत राष्ट्रगान, कन्या गुरुकुल महाविद्यालय (वेद संस्थान) की छात्राओं द्वारा वैदिक मंगलाचरण के रूप में अग्नि सूक्त का वाचन किया गया तत्पश्चात दीप प्रज्वलन हुआ हैं।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि का पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द जी ने बताया कि पहले आयोजन की तिथि 8 अप्रैल को दी गई थी लेकिन संयोग देखिए की तिथि बदली गई। मेरा आना संभव नहीं था परंतु परिस्थिति ऐसी बनी की मेरा आना सम्भव हो सका। मेरी हार्दिक इच्छा थी कि इस सम्मेलन में मैं

शेष पृष्ठ 6 पर

॥ ओ३म् ॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी
की
200 वीं
1824-2024

जन्म जयन्ती वर्ष एवं 31 मई, 1883 को जोधपुर आगमन व प्रवास के उपलक्ष में
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान एवं आर्य वीर दल राजस्थान के तत्वावधान में जोधपुर (राज.) में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 26, 27, 28 मई 2023 (शुक्रवार, शनिवार, रविवार)

स्थान : रेलवे सामुदायिक भवन, डी-6-A-B, भैरू चौराहा, भगत की कोठी रोड़, जोधपुर (राज.)

अध्यक्षता
स्वामी आर्यवेश
नेता, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

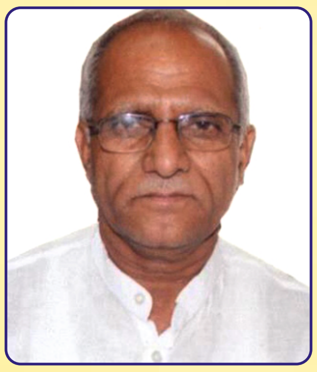

समन्वयक
प्रो. विट्ठलराव आर्य
मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

सान्निध्य
पं. माया प्रकाश त्यागी
कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में देश-विदेश के विद्वानों, आर्य सन्यासियों, आचार्यो, गुरुकुल के ब्रह्मचारियों, आर्यवीरों, आर्य विरांगनाओं, आर्य नेताओं एवं राजनेताओं की गरिमामयी उपस्थिति रहेगी। आप सभी से प्रार्थना है कि आप अधिक से अधिक संख्या में जोधपुर पहुँचकर इस आर्य महासम्मेलन में शामिल होवें तथा आर्य समाज की संगठन शक्ति का परिचय देकर इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान करें ।

जोधपुर के बाहर से आने वाले आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि अपने साथियों सहित पधारने की संख्या के बारे में 15 अप्रेल, 2023 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन, आवास आदि की समुचित व्यवस्था की जा सकें। सम्पर्क :- भंवरलाल आर्य-9414476888, जितेन्द्रसिंह-9828129655, हरिसिंह आर्य-9413957390

इस ऐतिहासिक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित हैं, कृपया दान राशि आर्य प्रतिनिधि सभा समिति (पंजीकृत) जोधपुर के नाम से क्रॉस चैक/मनी ऑर्डर/ड्राफ्ट/ऑनलाईन भिजवाने का कष्ट करें अथवा संस्था द्वारा संचालित खाते में सीधे ऑन लाईन के माध्यम से भिजवा कर सूचित करने का कष्ट करें जिससे रसीद शीघ्र आपको भेजी जा सके। खाते का विवरण निम्न प्रकार है - यूको बैंक खाता संख्या A/C - 00860110015582 IFSC Code : UCBA0002244 सहयोग राशि प्राप्त होने के बाद रसीद आपको भेज दी जायेगी।

निवेदक

बिरजानन्द एडवोकेट	**कमलेश शर्मा**	**भंवरलाल आर्य**	**चाँदमल आर्य**	**जितेन्द्रसिंह**	**हरिसिंह आर्य**	**दीपकसिंह पंवार**	**स्वामी आदित्यवेश**
प्रधान	मंत्री	समन्वयक/अधिष्ठाता/संचालक	अध्यक्ष	महामंत्री	अध्यक्ष	समाजसेवी	संयोजक
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान	आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान	आर्य वीर दल राजस्थान	आर्य वीर दल राजस्थान	आर्य वीर दल राजस्थान	आर्य वीर दल जोधपुर	आर्य समाज जोधपुर	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
9001304100	9460066557	9414476888	9413844743	9828129655	9413957390	9414134716	7015259713

आयोजन समिति :- जोधपुर - सर्वश्री नारायणसिंह आर्य, भंवरलाल हठवाल, गजेसिंह भाटी, पृथ्वीसिंह भाटी, रोशनलाल आर्य, शिवप्रकाश सोनी, सौभागसिंह चौहान, डॉ. लक्ष्मणसिंह आर्य, विनोद गहलोत मदनगोपाल आर्य, उम्मेदसिंह आर्य, पूनमसिंह शेखावत, विनोद आचार्य, हेमन्त शर्मा, वीरूमल आर्य, हनुमानप्रसाद गौड़, कमलेश सांखला, विक्रमसिंह आर्य, महेश आर्य, गणपतसिंह आर्य, जतनसिंह भाटी विकास आर्य, द्वारकादास आर्य, अशोक आर्य, जयनारायण आर्य, इन्द्रसिंह, राजेश देवड़ा (आर्य), जयदीपसिंह आर्य, भंवरलाल बिंवाल, अमृतलाल, भरतकुमार नवल, अभिषेक गहलोत, गुलाबचन्द आर्य मनोजकुमार परिहार, विरेन्द्र मेहता, चैनाराम आर्य, किशोरसिंह, कुलदीपसिंह सोलंकी, जयपुर :- ओमप्रकाश वर्मा, पुरूषोत्तमदास, शंकरलाल शर्मा, कृष्णचन्द शर्मा, श्रीमती मृदला सामवेदी, नाथुलाल शर्मा बलदेवराज आर्य, विकास आर्य, जितेन्द्र हरितवाल, अनिल शर्मा, पवन एडवोकेट, जालोर :- दलपतसिंह आर्य, कृष्णकुमार तिवारी, प्रशान्तसिंह, शिवदत्त आर्य, विनोद आर्य, कान्तिलाल आर्य अम्बिकाप्रसाद तिवारी, वरूण शर्मा, छगन आर्य, जगदीश आर्य, मोहनलाल भादरू, छगननाथ, गणपत आर्य, कन्हैयालाल मिश्रा, भरत मेघवाल, शिवगंज सिरोही :- हरदेव आर्य, जितेन्द्रसिंह आर्य जीवाराम आर्य, बनवारीलाल अग्रवाल, सुरेश मित्तल, दिनेश आर्य, नवरत्न आर्य, पुरूषोत्तम आर्य, मदन आर्य, कानाराम चौहान, देवाराम चौहान, पाली :- धनराज आर्य, दिलीप कुमार परिहार, मघाराम विजयराज आर्य, कुन्दन आर्य, देवेन्द्र मेवाड़ा, महेन्द्र प्रजापत, वासुदेव शर्मा, दिलीप गहलोत, गणपत भदोरिया, घेवरचन्द आर्य, हीरालाल आर्य, गजेन्द्र अरोड़ा, बालोतरा :- राजेन्द्र गहलोत अचलचन्द गहलोत, गोविन्दराम परिहार, मंगलाराम पंवार, बागाराम पंवार, लक्ष्मणलाल कच्छवाह, मांगीलाल पंवार, लूणचन्द चौहान, गणपतलाल गहलोत, दिलीप गहलोत, जितेन्द्र गहलोत, नरेश पंवार रामचन्द्र कच्छवाह, ओमप्रकाश आर्य, अरविन्द पुरोहित, अलवर :- धर्मवीर आर्य, वैद्य सुल्तानसिंह, कैलाश कर्मठ, मास्टर हरिसिंह आर्य, नरेन्द्र शर्मा, रामानन्द आर्य, ललित यादव, मीरसिंह आर्य अजमेर :- डॉ. गोपाल बाहेती, गोविन्द शर्मा, गणेश वैष्णव, सत्यनारायण शर्मा, किशनकुमार वैष्णव, सवाईमाधोपुर :- ओमप्रकाश आर्य, गिरधारसिंह एडवोकेट, अंकित जैन, कोटा :- देवप्रकाश मिश्रा शिवनारायण उपाध्याय, रघुवीरसिंह कच्छवाह, राजेन्द्रसिंह पावटा, भरत कुशवाह, इन्द्रकुमार सक्सैना, भरतपुर/दौसा :- अन्नतराम आर्य, विनोद कुमार, गिरीराज प्रसाद शर्मा, पं. राकेश आर्य, सुनील शर्मा

आयोजक

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान एवं आर्य वीर दल राजस्थान

कार्यालय : आर्य समाज, पाबूपुरा, गौरव पथ, नागरिक हवाई अड्डा रोड़, जोधपुर-342015 (राज.)

पृष्ठ 1 का शेष

जोधपुर में आयोजित तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तैयारी जोरों पर

इतिहास का विशेष कार्यक्रम बनने जा रहा है। उन्होंने कहा कि जोधपुर की धरती पर एक साथ एक मंच पर सैकड़ों संन्यासी उपस्थित होकर आर्यजनों का उत्साहवर्द्धन करेंगे तथा महर्षि के प्रति अपने-अपने उद्‌गार व्यक्त करेंगे। राजस्थान के सभी जिलों से हजारों जन और आर्य वीर सम्मेलन में दल-बल के साथ पहुंचेंगे।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या तथा संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि हरियाणा से सैकड़ों आर्य बहनें इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए उत्साहित हैं। बहनों ने बताया कि महर्षि दयानन्द जी ने ही सबसे पहले महिलाओं के अधिकारों की वकालत की थी।

आर्य वीरदल राजस्थान के अधिष्ठाता और सम्मेलन के संयोजक श्री भंवरलाल आर्य जी ने बताया कि अनेक गुरुकुलों के संस्थापक एवं संचालक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य, सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी, पुरोहित सभा के अध्यक्ष आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, गुरुकुलल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता डॉ. दीनानाथ शर्मा, युवा विद्वान् डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार, आचार्य धनंजय जी सहित सभी प्रान्तों के पदाधिकारी एवं नेताओं की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। श्री आर्य जी ने यह भी बताया कि कर्नाटक, तेलंगाना, आन्ध्र प्रदेश, उड़ीसा, बिहार, चण्डीगढ़ तथा हरियाणा से आर्यजनों ने आने की सूचना दी है। हम लोग सम्मेलन में आने वाले हजारों आर्य भाई बहनों के आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था में दिन-रात जुटे हुए हैं। आर्य वीर दल जोधपुर के सभी कार्यकर्ता श्री हरि सिंह आर्य के नेतृत्व में सम्मेलन की तैयारी में जुटे हुए हैं। नगर के सभी धर्मशालाओं तथा होटलों को बुक कराया जा रहा है। जोधपुर की प्रतिष्ठा के अनुरूप सम्मेलन में आने वाले हजारों लोगों को किसी भी प्रकार की कठिनाई न हो हम सभी लोग आवास एवं भोजन की व्यवस्था उसी प्रकार से कर रहे हैं। श्री भंवर लाल जी ने कहा कि सम्मेलन की स्वागताध्यक्ष बहन मनीषा पंवार सम्मेलन के लिए विशेष प्रयत्न कर रही हैं और उनके निर्देश पर सभी कार्यकर्ता सम्मेलन की तैयारी में जुटे हुए हैं।

बैठक में मनीषा पंवार के अतिरिक्त राजस्थान पशु धन विकास बोर्ड के अध्यक्ष राज्यमंत्री श्री राजेन्द्र सिंह सोलंकी, प्रसिद्ध समाजसेवी श्री सुनील जी परिहार भी विशेष रूप से उपस्थित थे।

अपने विचार प्रस्तुत करते हुए श्री राजेन्द्र सिंह सोलंकी ने कहा कि स्वामी जी जोधपुर से जो अपेक्षा रखते हैं हम उसमें निश्चित रूप से खरे उतरेंगे और सम्मेलन ऐतिहासिक होगा। इसी प्रकार श्री सुनील परिहार ने भी अपने सम्पूर्ण सहयोग की घोषणा की। पहली किश्त के रूप में उन्होंने अपने साथी श्री चोपड़ा जी से एक लाख रुपये की राशि भी सम्मेलन हेतु प्रदान कराई।

आर्य वीर दल राजस्थान के मंत्री श्री जितेन्द्र सिंह के प्रयत्न से लगभग 2 लाख रुपये की राशि भी इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी को सम्मेलन हेतु भेंट की गई। बैठक में पॉली, शिवगंज, बालोत्रा आदि स्थानों से भी कार्यकर्ता सम्मिलित थे।

आर्य महासम्मेलन में शहीदे आजम सरदार भगत सिंह के भतीजे श्री किरणजीत सिंह सिन्धु भी सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि के रूप में पधरेंगे।

आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री की स्वीकृति प्राप्त

आर्य महासम्मेलन के लिए आर्य समाज के उद्‌भट विद्वान् डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी ने भी अपनी स्वीकृति प्रदान की है।

पृष्ठ 4 का शेष

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में दो दिवसीय अखिल भारतीय वेद विज्ञान सम्मेलन हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

उपस्थित हो सकूँ। उन्होंने कहा कि यह हम सबके लिए गर्व का विषय है कि भारतीय संस्कृति का मूल जिन्हें हम वेद कहते है। ये सनातन धर्म की विशेषता है कि हमारी संस्कृति आज भी वैसी है। कठोपनिषद् के वाक्य को उद्धृत करते हुए कहा कि- उतिष्ठत् जाग्रत प्राप्य.....। वेद वैदिक परंपरा का मूल है। ये कहना अनुचित नहीं होगा कि वेद उपनिषद् संहिता आज के सन्दर्भ में वर्तमान राज्य संरचना में महत्त्वपूर्ण है। देश का आदर्श वाक्य 'सत्यमेव जयते' मुंडकोपनिषद् को उद्धृत किया। सत्य आरम्भ से केंद्र बिन्दु है। यथा रावण पर राम की विजय दशहरा पर्व के रूप में मनाया जाता है। महाभारत में कौरवों की सेना पर पांडवों की विजय को सत्य की असत्य पर विजय बताया गया। महात्मा गाँधी जिन्हें सत्य का उपासक माना जाता है उन्होंने भी सत्य को ईश्वर कहा।

मेरा मानना है कि यदि प्रकृति के साथ मिलकर चलेगें तो ही हम सुरक्षित रहेंगे। वेद हमारा सदैव मार्गदर्शन करते हैं। कई कार्यक्रमों में मुझे यह सुनने के लिए मिलता है कि भारत विश्वगुरु बनने की दिशा में है। मैं सुनता रहता हूँ, एक बार मैंने यह विश्लेषण किया कि विश्वगुरु की कल्पना क्या है तो मेरे मन में आया कि समस्त विश्व की सरकारों का संचालन भारत से होगा? विश्वगुरु की बात करते हो तो क्या चाहते हो, तब यह बात उभरकर आती है कि भारत जो कहे वो समस्त विश्व मानें, यही अवधारणा है कि भारत विश्वगुरु है। उन्होंने कहा कि सभी सरकारों ने अपने स्तर पर विकास के कार्य किये हैं। भारत के विश्वगुरु बनने का सच्चा अर्थ है कि भारत समस्त विश्व का मार्गदर्शन करे। अभी विगत 2020 में आई भयंकर त्रासदी 'कोरोना काल' में भारत के योगदान को विश्व ने सराहा, भारत में योग की प्रासंगिकता को समझते हुए 21 जून को विश्व योग दिवस घोषित किया गया, जी-20 सम्मेलन की मेजबानी करना आदि मुख्य रूप से उदाहरण हैं। इसलिए मेरा मानना है कि भारत को विश्वगुरु बनना नहीं है अपितु भारत विश्वगुरु है। श्री रामनाथ कोविन्द जी ने क्यूबा प्रवास के दौरान क्यूबा के राष्ट्राध्यक्ष द्वारा योग के सम्बन्ध में रखे गये विचारों को साझा किया।

सम्मेलन के द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र का मुख्य विषय 'महिला सशक्तिकरण', 'वैदिक चिन्तन' एवं 'युग निर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती' रहा। इस प्रथम सत्र का संचालन आचार्य प्रेमपाल शास्त्री (अध्यक्ष, पुरोहित सभा) द्वारा किया गया।

इस अवसर पर जिन महानुभावों ने अपने विचार रखे उनके नाम उल्लेखनीय हैं सर्वश्री आचार्या पवित्रा (प्राचार्या, कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, सासनी), डॉ. सत्यकाम शर्मा वेदालंकार, डॉ. रचना विमल (दिल्ली विश्वविद्यालय), प्रो. विजय कर्ण (नालन्दा विश्वविद्यालय, श्री अशोक आर्य (पूर्व कमिश्नर), श्री धर्मपाल आर्य आदि मुख्य रूप से थे।

इस सत्र की अध्यक्षता कर रहे अनेक गुरुकुलों के संस्थापक एवं संचालक स्वामी प्रणवानंद सरस्वती जी ने कहा कि वेद मार्ग ही सच्चा मार्ग है। हमारा लक्ष्य है कि पूरे देश में गुरुकुलों के माध्यम से प्रत्येक बालक को अपनी प्राचीन संस्कृति और संस्कार प्रदान किया जायें। यदि सभी लोग वेद मार्ग पर चलेंगे तो संसार का उपकार हो सकेगा। स्वामी प्रणवानन्द जी ने कहा कि इस कार्यक्रम में विशेष सहयोग देने वाले स्वामी चिदानन्द जी महाराज के प्रति मैं अपना आभार प्रकट करता हूँ।

स्वागत उद्‌बोधन श्री वेद प्रकाश टंडन ने कहा कि समस्त विश्व को अपने मूल की तरफ लौटने की आवश्यकता है। ऐसे सम्मेलनों के माध्यम से वेदों का संदेश जन-जन तक पहुचेगा। वेदों का ज्ञान हमारे विद्यालयों के पाठ्यक्रमों में भी पढ़ाया जाए।

वेद सम्मेलन में अपने विचार रखते हुए स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी ने कहा कि वेद ही सच्चे मानवता की जननी है। यदि सभी देश वेद मार्ग चलेंगे तो विश्व का कल्याण हो सकता है। वेद मार्ग ही सर्वोपरि मार्ग है। वेद से ही विज्ञान तथा अन्य विद्याएं निकली हैं। उन्होंने कहा कि युवाओं को एक दिशा चाहिए। स्किल इंडिया, डिजिटल इंडिया के साथ डिवाइन इंडिया तक बढ़ना है तो यह केवल वेदों के ज्ञान से संभव है। स्वामी जी ने कहा कि सब सेट है परंतु लोग अप्सेट हैं। इसके लिए उन्हें वेद की शरण में आना होगा। वेद केवल किताब नहीं पूरे जीवन का हिसाब है। नियम, कानून सरकारों से मिल सकते हैं परन्तु सत्य जीवन जीने के लिए वेद ज्ञान ग्रहण करके वेद मार्ग पर चलने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि मेडिटेशन इन लाइफ से काम चलेगा उसी से भीतर के युद्ध समाप्त हो सकते हैं।

विशिष्ट अतिथि वक्तव्य श्री राम लाल जी ने कहा कि 1200 वर्षों में भारत में अनेक उतार-चढ़ाव आए। संघर्ष का इतिहास रहा है भारत का। आजादी से पूर्व जिनका राज रहा उन्होंने चतुराई से भारत के मानस को बदलने की कोशिश की। भारत में हीन भावना भरने का प्रयास किया। जो कुछ भारत में अच्छा है दुनिया को जिससे ज्ञान मिला है वह सब 250 वर्षों में उपेक्षित रह गई। कोरोना ने हमें कष्ट दिए उसके बाद विश्व के मानस में परिवर्तन आया है। एक विश्वास बना है कि भारत की जीवनशैली और वेद ज्ञान हमें सुरक्षित रख सकती है। भारत की क्षमताओं से दुनिया प्रभावित हुई है। दुनिया के लोगों से जो चर्चा होती है। उससे देखा जा सकता है कि भविष्य में भारत दुनिया का मार्गदर्शन करेगा। वेद को केवल जानने से काम नहीं चलेगा बल्कि वेद ज्ञान के आधार पर जीना भी है। यदि वेद मार्ग पर हम चलेंगे तो शीघ्र ही भारत विश्व का मार्गदर्शन करेगा। वेद वाई-फाई का पासवर्ड है। वेदों की अनुभूति करें उनको समझने का प्रयास करें। वेद को जन-जन तक कैसे पहुँचाया जाये इसकी क्या व्यवस्था हो सकती है इस पर विचार हो रहा है। वेदों में ईश्वर की वाणी, सनातन धर्म के आधार स्तम्भ है।

वेद सम्मेलन में पधारे सभी अतिथियों एवं विद्वानों का धन्यवाद ज्ञापन डॉ. देवेश प्रकाश ने किया। इस सम्पूर्ण वैदिक सम्मेलन के संयोजक एवं मंच संचालन का दायित्व डॉ. धमेन्द्र शास्त्री एवं डॉ. देवेश प्रकाश के द्वारा सम्पन्न किया गया। इस पूरे कार्यक्रम की पूरी वीडियोग्राफी बहुत ही कुशलता के साथ युवा विद्वान् श्री जय प्रकाश शास्त्री के सुपुत्र श्री विवेक आर्य ने की। और उनके साथ श्री अंकित शास्त्री ने सभी अतिथियों के सत्कार में विशेष भूमिका निभाई। दो दिवसीय वेद सम्मेलन सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

संस्कृता स्त्री पराशक्तिः ओ३म् संस्कारवान स्त्री परमशक्ति है

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वीं जन्म जयन्ती वर्ष
एवं
स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज की 17वीं पुण्यतिथि के अवसर पर

कन्याओं एवं युवतियों के लिए स्वर्णिम अवसर

कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर

दिनांक : 6 जून (मंगलवार) से 12 जून (सोमवार), 2023 तक
स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, गांव टिटौली, जिला–रोहतक (हरियाणा)

पांच सौ कन्याएँ एवं युवतियाँ भाग लेंगी

शिविर के मुख्य आकर्षण

- राष्ट्रीय भावना, अनुशासन, नैतिक शिक्षा तथा परोपकार की शिक्षा दी जायेगी।
- योगासन, प्राणायाम, जूडो–कराटे आदि शारीरिक एवं आत्मरक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- वैदिक विद्वानों व विदुषियों द्वारा संध्या, यज्ञ, आर्य संस्कृति व वैदिक सिद्धान्तों पर व्याख्यान तथा शंका समाधान किया जायेगा।
- चर्चित महिलाओं द्वारा जीवन में सफलता के गुर सिखाए जायेंगे।
- व्यक्तित्व विकास, वक्तृत्व कला एवं आत्म विश्वास के विकास का प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- कन्या भ्रूण हत्या, दहेज आदि सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जागरूक किया जायेगा।
- भोजन की व्यवस्था पूर्णतः निःशुल्क रहेगी।

आवश्यक नियम व निर्देश

- अनुशासन का पालन आवश्यक होगा।
- कोई भी कीमती सामान व मोबाइल अपने साथ न लेकर आयें।
- ऋतु अनुकूल बिस्तर, टार्च, सफेद सूट व नित्य प्रयोग होने वाला सामान साथ लायें।
- इच्छुक छात्राएँ 200 रुपये प्रवेश शुल्क सहित अपना प्रवेश पत्र अपने माता–पिता/अभिभावक द्वारा अनुमोदित कराकर 30 मई तक अवश्य जमा करवाएं। सीटें सीमित होने के कारण विलम्ब से आने वाले आवेदन स्वीकृत नहीं होंगे।

दानी महानुभावों से अपील

इस सात दिवसीय विशाल शिविर के प्रबन्ध एवं भोजन प्रातराश आदि पर लाखों रुपये खर्च होने हैं। आप जैसे दानी महानुभावों के सहयोग से ही इस व्यय की पूर्ति होनी है। अतः आपसे प्रार्थना है कि राष्ट्र निर्माण के इस यज्ञ को सफल बनाने के लिए आप अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग कराएँ। आप यदि धनराशि के रूप में योगदान देना चाहते हैं तो क्रास चैक 'स्वामी इन्द्रवेश फाण्डेशन' या 'युवा निर्माण अभियान' के नाम से भिजवाने की कृपा करें अथवा नीचे लिखे बैंक खाते में सीधे परिवर्तित कराने का कष्ट करें। यदि वस्तु रूप में दान देना चाहें तो आप आटा, दाल, चावल, शुद्ध घी, रिफाइण्ड, दलिया, चीनी, दूध, सब्जी, मसाले आदि सामान भिजवा कर सहयोग कर सकते हैं। आपके द्वारा दिये गये दान से कन्या चरित्र निर्माण रूपी पवित्र यज्ञ सफल होगा तथा आप पुण्य के भागी बनेंगे।

Name - Swami Indervesh Foundation A/C - 2978000100105117 IFSC - PUNB0297800
Bank - PNB Tilaknagar Rohtak

आयोजक

युवा निर्माण अभियान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, धर्म प्रतिष्ठान एवं स्वामी इन्द्रवेश फाउंडेशन
कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, रोहतक (हरियाणा)
सम्पर्क नं.:– 9416630916, 9354840454

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- ***www.facebook.com/SwamiAryavesh*** व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन जोधपुर
दिनांक : 26, 27 व 28 मई, 2023 के लिए
आर्य जनता से हार्दिक अपील

सम्माननीय आर्यजन!

जैसा कि आप सभी को विदित है कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की दूसरी जन्म शताब्दी 2024 में आ रही है। ऋषि दयानन्द जी की दूसरी जन्मशती को पूरे विश्व में ऐतिहासिक रूप में मनाने के लिए प्रत्येक आर्य उत्साहित है। इस उपलक्ष्य में आगामी 26, 27 एवं 28 मई, 2023 (शुक्रवार, शनिवार एवं रविवार) को जोधपुर में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, आर्य वीरदल राजस्थान तथा आर्य वीरदल जोधपुर के तत्वाधान में आयोजित किया जा रहा है। इस महासम्मेलन में देश के विभिन्न भागों में हजारों की संख्या में आर्य भाई–बहन और युवक/युवतियां भाग लेने के लिए तैयारी कर रहे हैं। समय अब कम रह गया है। अतः आप सभी को जोधपुर आने की तैयारी प्रारम्भ कर देनी चाहिए। जो आर्यजन जोधपुर के सम्मेलन में सम्मिलित होना चाहते हैं वे कृपया अपने आने की सूचना अवश्य ही देने का कष्ट करें कि वे कब और कितनी संख्या में जोधपुर पहुंचेंगे, ताकि आप सभी के भोजन एवं आवास की समुचित व्यवस्था की जा सके। देश के अन्य प्रान्तों से आने वाले आर्यजनों को अभी से अपनी रेल या हवाई जहाज आदि से आने के लिए टिकट बुक करा लेनी चाहिए ताकि बाद में असुविधा न हो।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, जोधुपर के इस विशाल आयोजन पर लाखों रुपया व्यय होना है जो आप सभी के पवित्र सहयोग से ही पूरा हो सकेगा। अतः हमारी आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप स्वयं अपनी ओर से तथा अपने अन्य मित्रों व सहयोगियों को प्रेरित करके अधिक से अधिक दान राशि आप निम्नलिखित बैंक खाते में या महासम्मेलन के कार्यालय के पते पर बैंक ड्राफ्ट, चैक आदि से भिजवाने की कृपा करें। आपके इस पवित्र दान से यह महायज्ञ तथा महासम्मेलन निश्चित रूप से ऐतिहासिक होगा। जोधुपर को आपके स्वागत में ओ३म् झण्डों तथा ओ३म् की लड़ियों, बैनरों तथा झण्डों से सजाया जा रहा है और आयोजन समिति आपके आव भगत एवं व्यवस्था के लिए दिन–रात परिश्रम कर रही है। हमें पूरा विश्वास है कि आर्यजन दल–बल सहित सम्मेलन में पधारकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रति अपनी श्रद्धा एवं निष्ठा का परिचय देंगे। आप किसी भी जानकारी के लिए निम्नलिखित पते पर या दूरभाष पर सम्पर्क कर सकते हैं।

जोधपुर के बाहर से आने वाले आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि अपने साथियों सहित पधारने की संख्या के बारे में 15 अप्रेल, 2023 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन, आवास आदि की समुचित व्यवस्था की जा सकें | सम्पर्क :- भंवरलाल आर्य-9414476888, जितेन्द्रसिंह-9828129655, हरिसिंह आर्य-9413957390

इस ऐतिहासिक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित हैं, कृपया दान राशि आर्य प्रतिनिधि सभा समिति (पंजीकृत) जोधपुर के नाम से क्रॉस चैक/मनी ऑर्डर/ड्राफ्ट/ऑनलाईन भिजवाने का कष्ट करें अथवा संस्था द्वारा संचालित खाते में सीधे ऑन लाईन के माध्यम से भिजवा कर सूचित करने का कष्ट करें जिससे रसीद शीघ्र आपको भेजी जा सके। खाते का विवरण निम्न प्रकार है - यूको बैंक खाता संख्या A/C - 00860110015582 IFSC Code : UCBA0002244 सहयोग राशि प्राप्त होने के बाद रसीद आपको भेज दी जायेगी।

स्वामी आर्यवेश
अध्यक्ष, आर्य महासम्मेलन

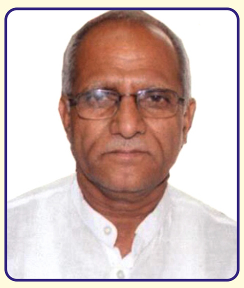

प्रो. विट्ठलराव आर्य
मंत्री, सार्वदेशिक सभा

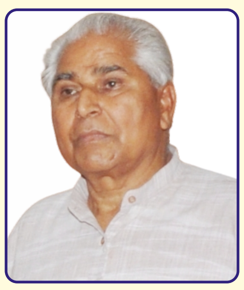

पं. माया प्रकाश त्यागी
कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक सभा

स्वामी आदित्यवेश
मुख्य संयोजक, आर्य महासम्मेलन

श्री बिरजानन्द एडवोकेट
प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

श्री कमलेश शर्मा
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

श्री भंवर लाल आर्य
अधिष्ठाता आर्य वीरदल राजस्थान

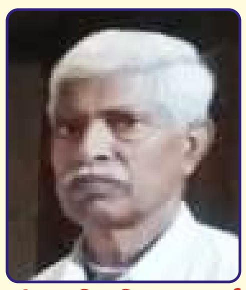

श्री हरि सिंह आर्य
अध्यक्ष, आर्य वीरदल जोधपुर

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।